

चिकित्सा-विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गजट

पत्र व्यवहार हेतु पता :-

सम्पादक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गजट

127/204 'एस' जूही, कानपुर-208014

सम्पर्क सूत्र :- 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष - 48 • संयुक्तांक - 18 एवं 19 • कानपुर 1 से 15 अक्टूबर 2026 • प्रधान सम्पादक - डा0 एम0 एच0 इंदरीसी • वार्षिक मूल्य ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में

बिना मापदण्ड के मनचाहे ढंग से आज भी कार्य जारी हैं

अब तो रुक जाइये

जिन्दगी में खोने और पाने का सिलसिला चलता ही रहता है लेकिन मनुष्य का स्वभाव कुछ ऐसा होता है जो सिर्फ पाना ही चाहता है और जब बात खोने की आती है तो उसे बहुत कष्ट होता है परन्तु खोना और पाना चलता ही रहता है जीवन में हम कुछ खोयें न, ऐसा हो नहीं सकता इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में खोने और पाने का बहुत महत्व है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो कि लगभग डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक समय से भारत वर्ष में प्रचलित है और इस चिकित्सा पद्धति के जानकार लगातार अपनी योग्यता के आधार पर चिकित्सा व्यवसाय में इस पद्धति को प्रयोग में लाते हुए जनता की सेवा कर रहे हैं लेकिन जो कुछ भी वह पाना चाहते हैं वह अर्थ के रूप में भले ही पा जाते हों परन्तु जो संतुष्टि उससे मिलनी चाहिये वह प्राप्त नहीं हो पा रही है, यदि हम अतीत से लेकर वर्तमान की बात करें तो यदि अतीत गौरवशाली नजर आता है तो वर्तमान संघर्ष के लिए तैयार रहने के लिए कहता है लेकिन इस संघर्ष की जो पृष्ठभूमि है वह भी कम रोचक नहीं है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का पदार्पण देश में जिन परिस्थितियों में हुआ है वह अपनी कहानी स्वयं कहता है एलोपैथी का प्रयोग ज्यों-ज्यों बढ़ रहा था अंग्रेज शासक लगातार हमारी परम्परागत चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की उपेक्षा कर रहा था वह इसलिए कर रहा था क्योंकि अंग्रेजों का मानना था यदि किसी देश को कमजोर करना है और उस पर बिना किसी रोक-टोक के राज करना है तो उस देश की संस्कृति, भाषा और चिकित्सा पद्धति तथा शिक्षण व्यवस्था पर प्रहार करो यह चारों चीजें ज्यों-ज्यों कमजोर होंगी अपना वर्चस्व बढ़ता जायेगा, अंग्रेज अपनी नीति पर सफल भी हुए शिक्षण व्यवस्था पर महत्वपूर्ण परिवर्तन किया जिससे संस्कृति का हास हुआ, ठीक यही काम

चिकित्सा पद्धति के साथ भी किया गया वैद्यों के साथ सौतेला व्यवहार होने लगा आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में छेड़-छाड़ की गयी और अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा दिया जाने लगा, साथ ही साथ ऐसे कानून बनाये गये जिसके दायरे में पद्धतियों को आना था इस दायरे में आने के लिए जो मापदण्ड बनाये गये वे तत्समय आसान नहीं थे, जब आज़ादी की लड़ाई हुई तो

तुलानात्मक रूप से हम काफी पिछड़ गये, कानूनी व्यवस्था के अनुरूप इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालक गण इस पर नियन्त्रण नहीं रख सके और यह कटु सत्य है कि जहाँ पर नियन्त्रण नहीं होता है वहाँ अराजकता जन्म लेती है, इसका जीता जागता प्रमाण इलेक्ट्रो होम्योपैथी में दिखायी देता है बिना मापदण्ड के मनचाहे ढंग से कार्य आज भी जारी हैं, नियमों को ताक पर

लिया तब जो होना था वही हुआ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सरकारीकरण की हर तरफ से मांग उठने लगी जिसकी जो मनोदशा थी वह उसी के अनुरूप कार्य करने लगा परिणामतः इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मान्यता की मांग उलझ कर रह गयी, अलग-अलग लोगों के अलग-अलग दृष्टिकोण, प्रस्तुतीकरण का तरीका पृथक-

नये आदमी के लिए बहुत अच्छे भविष्य का संकेत नहीं दे रही हैं।

लगातार पाने के स्थान पर हमारे साथी खोते जा रहे हैं चरम से शून्य तक पहुँचाने की क्रिया भी हमारे अपने साथियों द्वारा की गयी लेकिन अब तो उन्हें रुक जाना चाहिये क्योंकि खोते-खोते कहीं ऐसा न हो जाये कि उन्हें अपना वजूद ही ढूँढ़ना पड़े।

समाज में विश्वसनीयता बनी रहनी चाहिये जो सम्मान पद्धति को प्राप्त है यदि उसको बढ़ा नहीं सकते तो उसको गिराना भी नहीं चाहिये, इसके लिए प्रख्यात लेखक यशपाल जी की कहानी "परदा" से सबक सीखना चाहिये कि सम्मान बचाने के लिए अन्तिम क्षणों तक प्रयासरत रहना चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सम्मान में तो कमी नहीं आयेगी लेकिन जो इसके संचालक गण हैं यदि वे अपनी सोच में परिवर्तन नहीं करते हैं तो, न तो उनका सम्मान रहेगा और न ही उनकी संचालन शैली, यह जरूर होगा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चरम तक पहुँचने के लिए समय में और अधिक बढ़ोत्तरी हो जायेगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थिर है और इसके संचालन में किसी भी तरह की कोई बाधा नहीं है, हाँ यह जरूर है कि संचालन के लिए जिन नियमों और कानूनों का पालन करना है वह तो करना ही होगा।

पंजीयन का विषय बार-बार उभारा जाता है, पंजीयन का विषय महत्वपूर्ण विषय है इसे गौण नहीं किया जा सकता, जो लोग मान्यता की बात कर रहे हैं वह इस कटु सत्य को स्वीकार कर लें कि पंजीयन की नाव पर ही बैठकर मान्यता की लड़ाई लड़ी जा सकती है, कुछ लोग न्यायालय की शरण में जाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी से अपना पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं, ऐसे लोगों के पास खोने के लिए बचा ही क्या है लेकिन हम सबको अभी बहुत कुछ पाना है जिसके लिए प्रयास करने होंगे।

- ✓ यदि अतीत गौरवशाली नजर आता है तो वर्तमान संघर्ष के लिए तैयार रहने के लिए कहता है
- ✓ इलेक्ट्रो होम्योपैथी उन दिनों जिन लोगों से संचालित हो रही थी शायद उन्होंने वह प्रयास नहीं किये जो करने चाहिये थे

महात्मा गांधी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया, इस आन्दोलन के तहत अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार का नारा दिया गया, उस समय आज की एलोपैथिक दवाओं को (English) अंग्रेजी दवा कहा जाता था जो कि आज भी जारी है एलोपैथिक स्त्रोओं पर आज भी साइन बोर्ड पर अंग्रेजी दवाखाना लिखा जाता है, परिस्थितियों में महात्मा गांधी जी ने कहा कि "Germes is better than English" अर्थात् गांधी जी ने एलोपैथी के स्थान पर होम्योपैथी के प्रयोग की सलाह दी थी।

समय बीतता गया देश आजाद हुआ व्यवस्थायें बदलीं चिकित्सा पद्धतियों के मान्यता के सन्दर्भ बदले, इलेक्ट्रो होम्योपैथी उन दिनों जिन लोगों से संचालित हो रही थी शायद उन्होंने वह प्रयास नहीं किये जो करने चाहिये, शिक्षा व्यवस्था जिस ढंग से चल रही थी उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया इसका परिणाम यह हुआ कि

रखकर बोर्डों और काउन्सिलों का गठन होने लगा विडम्बना तो यह है कि स्वयं द्वारा बनाये गये जिन नियमों को ताक पर रखकर बोर्डों और काउन्सिलों का गठन किया गया तथा स्वयं द्वारा बनाये गये जिन नियमों को स्वीकार करना था वही नहीं स्वीकार किये गये, जिससे यह हुआ कि मनचाहा कार्य होने लगा जहाँ पर नियन्त्रण नहीं होता है और कार्य अपनी मर्जी से किये जाने लगते हैं ऐसे कार्य कभी भी दीर्घकालिक नहीं होते हैं, क्योंकि स्थायित्व के लिए आधार मजबूत होना चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आधार तो बहुत मजबूत है लेकिन इसका संचालन जिस ढंग से किया गया उसने समाज में कभी भी कोई अच्छा संदेश नहीं दिया, वर्ष 1990 से लेकर 2000 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रगति चरम पर थी हर क्षेत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास हो रहा था लेकिन जब संख्या अधिक हो गयी लोग खेमों में बंटने लगे समर्पण का स्थान स्वार्थ ने ले

पृथक, परिणाम यह हुआ कि शासन सत्ता में बैठे हुए अधिकारी यह निर्णित करने में पीछे नहीं रहे कि यहाँ पर अपनी अपनी ढपली अपना-अपना राग की कहावत चरितार्थ की जा रही है, चिकित्सा पद्धति के उन्नयन के बजाय अवनयन होने लगा सरकारी तन्त्र में बैठे लोग नई-नई कमियां ढूँढ़ने लगे और जैसे ही कोई हल्की सी कमी मिली तो वह प्रहार करने से नहीं चूके, वर्ष 2003 से जो गिरावट का सिलसिला प्रारम्भ हुआ उसको 2011 में जाकर विराम मिला, इन 8 वर्षों में बहुत सारे ऐसे परिवर्तन हो गये जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की गयी थी, समय की गति है जब-जब भी जो होना है वह होकर रहता है, लेकिन यदि हम इसी विश्वास पर बैठे रहे तो कार्य कैसे करेंगे अधोगति से हमें ऊपर आना है, चरम तक पहुँचना हमारा लक्ष्य है और इसे पाने के लिए कर्तव्यों से पीछे नहीं हटना होता है लेकिन वर्तमान में जो परिस्थितियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं वह किसी

देश के लगभग ढाई दर्जन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थान/संगठन सरकार के 28 फरवरी, 2017 की सूचना के निष्कर्ष की प्रतीक्षा में!

Mechanism for Consideration of proposals for recognition to new/alternative system of Medicine

This is to state for information of all concerned, that the Department of Health Research, in the Ministry of Health and Family Welfare, Government of India, has been receiving, from time to time, miscellaneous references/representations from various individuals/bodies for according recognition to alternative systems of medicine.

In this connection, it may be stated that the Ministry of Health and Family Welfare and the Ministry of AYUSH are regulating different matters relating to various system of medicine in the country. At present, the modern system of medicine is regulated through the Indian Medical Council Act 1956; the Homoeopathic System of Medicine is regulated through Homoeopathy Central Council Act 1973 and the four Indian Systems of Medicine, namely Ayurveda, Siddha, Sowa Rigpa and Unani are regulated through the Indian Medicine Central Council Act 1970. Yoga and Naturopathy are also systems recognized under the Ministry of AYUSH, Government of India. However, there is no legal framework for recognizing and regulating any other new (ie. alternative) systems of medicine.

The question of bringing in a separate Central legislation to facilitate grant of recognition to new, ie., alternative systems of medicine, has been under consideration of the Union Government for quite sometime. After comprehensive consideration of the matter in the Government. It has now been decided to put in place a mechanism, in which, in lieu of a Central legislation, an Inter-Departmental Committee, comprising representatives from Central and State Governments, some regulatory bodies and persons of repute from the field of health sciences, will analyse and examine proposals seeking recognition to alternative systems of medicine, in order to establish the viability, or otherwise, of such systems for their safe adoption in the national healthcare system. This Inter-Departmental Committee will examine those proposals for recognition of systems of medicine, concept of which is quite independent of the existing recognised systems of medicine, namely, Allopathy system and AYUSH system. Recommendations that may be made by such committee would thereafter, be considered by the Central Government in order to decide if such systems are viable and safe, and can be suitably notified by way of executive orders.



क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शोध की आवश्यकता है?

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चलते हुए लगभग डेढ़ शताब्दी से भी अधिक का समय हो गया है और इन वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का काफी विस्तार भी हुआ है, यूरोपियन देशों के साथ साथ एशिया और अमेरिका में भी इस चिकित्सा पद्धति ने अपने पाँव पसारे हैं, कुछ अरब और खाड़ी देशों में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कुछ प्रतिनिधि मिल जाते हैं, परन्तु इस चिकित्सा पद्धति का सर्वाधिक विस्तार एशियायी देशों में ही हुआ है और इन देशों में इस चिकित्सा पद्धति का विस्तार इस लिये हुआ क्योंकि दुनिया में एशिया और मध्य एशिया के कुछ ऐसे देश हैं जो विकास के अभी प्रथम पायदान पर ही हैं, जबकि तुलनात्मक रूप से यूरोपियन देश विकसित और काफी विस्तृत हैं इन देशों में पाश्चात्य (एलोपैथी) चिकित्सा पद्धति का ही बोल-बाला है और जिन-जिन देशों में एलोपैथी की जड़ें ज़्यादा मज़बूत हैं वहाँ पर अन्य चिकित्सा पद्धतियों को विकास का उतना अवसर नहीं मिला, जितना कि मिलना चाहिये और यही वह प्रमुख कारण हैं जिससे कि अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हो पायीं।

जहाँ तक भारत वर्ष की बात है यहाँ पर आयुर्वेद मूल चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित रही है, चूंकि अखण्ड भारत व उससे जुड़े हुए अन्य राष्ट्र भी आयुर्वेद से प्रभावित हो रहे हैं, समय बदलता है परिस्थितियाँ बदलती हैं और इन्हीं परिवर्तनों के दौर पर व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन होता है, जब व्यवस्थायें परिवर्तित होती हैं सत्ता में परिवर्तन हो ही जाता है और यह भी कटु सत्य है कि सत्ता का प्रभाव उस देश की शिक्षा व्यवस्था व चिकित्सा व्यवस्था पर पड़ता है।

धीरे-धीरे राजशाही खत्म हुई और क्रमशः मुगलों और अंग्रेजों ने सत्ता संभाली इसका परिणाम यह हुआ कि मुगल काल में यूनानी चिकित्सा पद्धति को अपने पाँव पसारने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ परन्तु जहाँ एक ओर मुगल शासन पूरे विश्व में नहीं था परिणाम यह हुआ कि यूनानी चिकित्सा पद्धति का विश्व स्तर पर प्रसार नहीं हो पाया, वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों ने पूरे विश्व में अपना साम्राज्य

कायम किया और अंग्रेजों द्वारा जिन-जिन देशों पर कब्जे किये गये वहाँ अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए वहाँ की संस्कृति पर प्रहार किया संस्कृति नष्ट करने के लिए वहाँ की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर भरपूर प्रहार किया गया परिणाम स्वरूप वह अपनी छापा छोड़ने में सफल हो गये जिसके कारण एलोपैथी चिकित्सा पद्धति को बढ़ाने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ।

अंग्रेजों ने न केवल एलोपैथी को बढ़ावा दिया बल्कि सूझ-बूझ के साथ अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों का दमन भी किया, दमन के लिए उन्होंने एलोपैथी का भरपूर प्रचार व प्रसार किया, सरकारी खजानों का खुलकर एलोपैथी के प्रसार के लिए प्रयोग किया, एलोपैथी की तुलना में अन्य चिकित्सा पद्धतियों को शोध के पर्याप्त अवसर भी नहीं मिले और यही वह मुख्य कारण था कि अन्य पद्धतियाँ एलोपैथी की तुलना में कहीं भी बराबरी नहीं कर सकीं, चूंकि जर्मन का अंग्रेजों से अक्सर युद्ध होता रहता था इसलिए जर्मनी में नई-नई पद्धतियों को जन्म लेने का अवसर मिला, इसमें से कुछ पद्धतियाँ फलीफूलीं और कुछ जीवन के पहले ही समाप्त हो गयीं परन्तु होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकास का अवसर मिला।

आज उसी का परिणाम है कि होम्योपैथी के साथ-साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों के रूप में स्थापित हो सकीं एक ओर होम्योपैथी का आविष्कार सैमुअल हैनीमैन द्वारा किया गया वहीं दूसरी ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जनक काउण्ट सीज़र मैटी रहे, मैटी का जन्म 1809 में इटली में हुआ था तब अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ जो व्यवहार में लायी जा रही थीं उससे शायद मैटी प्रभावित नहीं थे, उनके मन में कहीं न कहीं यह चला करता था कि जो पद्धतियाँ वर्तमान में चलन में हैं वह रोग की जड़ तक प्रभाव नहीं डालती हैं जिसके कारण बीमारी बार-बार सर उठा लेती है, होम्योपैथी से भी उनका उतना लगाव नहीं था जितना प्रचारित किया जाता है, मैटी अक्सर कहते थे कि एक रोग पर एक औषधि कैसे लाभ कर सकती है? जबकि किसी एक बीमारी के आने पर विभिन्न प्रकार के लक्षण प्रकट

होते हैं।

इस प्रकार का अन्तर द्वन्द उनके मन में चला करता था वह पेड़ पौधे छोटी-छोटी पादपों पर पैनी नज़र रखते थे और पौधों पर हो रहे परिवर्तन पर गम्भीरता से विचार भी किया करते थे, घनाड्य परिवार से सम्बन्ध रखने के कारण उनके मन में कुछ नया करने की हर समय इच्छा बनी रहती थी और यही इच्छा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के रूप में प्रकट हुई, कहा जाता है कि मैटी को कुत्ते से बहुत लगाव था, वह इस बात को प्रमाणित भी करता है कि मैटी छोटे से छोटे जीव के शरीर में होने वाले परिवर्तनों को बड़ी गहराई से देखते थे, कुत्ते के बाल झड़े, खुजली हुई और शरीर का पर घाव हो गये, मैटी उस जीव को प्रायः रोज देखते थे और उसके परिवर्तनों पर विचार करते थे कुत्ता उनके बगीचे में एक विशेष स्थान पर जाता था और वहाँ पर उगे पेड़ पौधे पर लोटा करता था।

धीरे धीरे उस कुत्ते के घाव ठीक होने लगे, मैटी इस पूरी घटना पर तल्लीनता से दृष्टि रखे हुये थे जब कुत्ते के शरीर पर परिवर्तन देखा और धीरे धीरे वह कुत्ता पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया, तब मैटी चिल्ला पड़े कि चमत्कार हो गया और इसी चमत्कार को जानने के लिए मैटी ने सघन अध्ययन प्रारम्भ किया था, विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करने के बाद उन्होंने पाया कि क्रमेण पौधे में विद्युतीय शक्ति होती है, जिसके कारण शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डाला जा सकता है और यहीं से प्रारम्भ हुई इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उत्पत्ति की कहानी।

आज हमारे कुछ नवजवान साथी जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य कर रहे हैं उनका मानना है कि मैटी शिक्षित ही नहीं थे और न मैटी में इतनी योग्यता थी कि वह किसी नई पद्धति की खोज करते ! (आजकल तो सोशल मीडिया का जमाना है, सोशल मीडिया के प्रेमी को अगर कह दिया जाय कि कौआ कान ले गया तो वह कान नहीं देखेगा कौए के पीछे जाना अधिक पसंद करेगा) हो सकता है हमारे उन साथियों ने कहीं इस तरह का कोई लेख या व्याख्यान सोशल मीडिया पर पढ़/देख लिया होगा और बिना उस पर कोई चर्चा/अध्ययन किये इस तरह की

शेष पेज 3 पर

क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शोध पेज 2 से आगे

चर्चा सार्वजनिक रूप से करने लगे।

हमारे जो साथी इस तरह की चर्चा करते हैं उन्हें थोड़ा सा अपने चिन्तन पर विचार करना चाहिये कि योग्यता को किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होती है।

आज से लगभग 2 शताब्दी पूर्व जब मैटी का जन्म हुआ होगा तब उस समय शैक्षिक व्यवस्था क्या रही होगी? इस पर भी उन्हें नज़र डालनी चाहिये आज जो इतिहास मैटी के बारे में मिल रहा है वह अकल्पनीय है।

जब भी किसी का इतिहास लिखा जाता है तो इतिहास कार का अपना दृष्टिकोण होता है किसी भी महापुरुष के जीवन के बारे में हर इतिहासकार अपनी अपनी दृष्टि से चित्रण करता है, हम किसी भी महापुरुष के बारे में ले-लें तो हम यही पाते हैं कि सारे इतिहासकारों का मत एक सा नहीं होता है, एक इतिहासकार जहाँ जिस कार्य को सही ठहराता है वहीं उसी कार्य को दूसरा इतिहासकार अनावश्यक ठहरा देता है इस

तरह की भ्रान्तियाँ तो चलती ही रहती हैं परन्तु समाज, व्यक्ति की अच्छाईयों को ग्रहण कर लेता है, ठीक इसी तरह मैटी क्या थे? और क्या नहीं थे? इसके बारे में ज़्यादा जानने से बेहतर है कि जनहित में मैटी ने जो नई उपलब्धि दी उसे हम स्वीकार करें।

जब हम मैटी के बारे में ज़्यादा अध्ययन करते हैं तो दो शब्द भी दिखायी देते हैं वह शब्द हैं क्वैकरी व फ़ेक, कुछ लोगों का मानना है कि मैटी क्वैकरी करते थे तत्काल परिस्थितियों में क्वैकरी का अर्थ इस समय के अर्थ से कुछ भिन्न रहा होगा, चूँकि होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी परिस्थिति जन्य समान लगती हैं इसलिए उस समय लोगों ने उसे क्वैकरी का नाम दिया होगा।

हमें इन सब चीज़ों से ऊपर उठकर यह मानना है कि 200 वर्ष से भी पहले मैटी थे, मैटी का साहित्य था, इलेक्ट्रो होम्योपैथी थी और यही हमारी पहचान है, वर्ष 1880 के आस पास फ़ादर मुलर जो हैनीमैन

के प्रशंसक व सहयोगी थे भारत वर्ष आये यहाँ पर शिक्षण कार्य किया और मैटी के विचारों को फैलाया, एक तरह से होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया।

वर्ष 1895 में कनकनैडी मंगलूर (दक्षिण भारत) में ही डा0 फ़ादर मुलर द्वारा स्थापित कुष्ठ अस्पताल के निर्माण में जिसकी कुल लागत 7705 रुपये थी, उस अस्पताल के निर्माण हेतु 2395 रुपये दान के रूप में डा0 काउण्ट मैटी द्वारा दिये गये थे जिसके स्मरण में फ़ादर मुलर्स विजिटर्स रूम में आज भी महात्मा मैटी का नाम पत्थर में लिखा देखा जा सकता है, यह वह सारे प्रमाण हैं जो हमें दिखायी देते हैं और इन प्रमाणों के लिए हमें किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, 1952 तक दिल्ली के पहले स्वास्थ्य मंत्री डा0 युद्धवीर सिंह इटली की दवाइयों का प्रयोग करते थे और चिकित्सा करके रोगियों को रोगमुक्त करते थे यह

आज़ादी के बाद का प्रमाण है, अब मैटी के बारे में हम जितना भी जानना चाहें वह सबकुछ मिल सकता है बशर्ते हमारी दृष्टि संकीर्ण न हो, मात्र किसी एक व्यक्ति के कह देने से कोई विधा खराब नहीं हो जाती है, फिर जिसकी जड़ें लगभग 200 वर्ष से भी अधिक पुरानी हों उसमें कुछ न कुछ दम तो है ही।

इसी दम के कारण यह पद्धति निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है किसी के बारे में कोई टिप्पणी करना बहुत आसान होता है परन्तु वहाँ तक पहुँचना कितना मुश्किल होता है! मैटी के बारे में लोग तरह तरह की बातें करते हैं लोग कहते हैं कि मैटी डाक्टर नहीं थे, तो जितने भी वैज्ञानिक होते हैं वह सिर्फ शोध करते हैं अपने मन में कौद रहे विचारों को अन्तिम स्थिति देने के बारे में प्रयास करते हैं।

अब आप न्यूटन को ही ले लें न्यूटन ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया वह आज भी सर्वस्वीकार है अब कोई न्यूटन की योग्यता के

बारे में टीका टिप्पणी करे यह कहाँ तक न्यायोचित है! इसका निर्णय आप स्वयं ही कर सकते हैं।

जिस मैटी की खोज पर लगातार 200 वर्षों तक भिन्न भिन्न देशों ने भिन्न भिन्न वैज्ञानिकों द्वारा कार्य किया जाता रहा, उस कार्य पर यदि हम कोई प्रश्न चिन्ह लगाते हैं तो वह तर्क संगत नहीं है, एलोपैथी का जन्म जब हुआ था उस समय क्या उसका स्वरूप इतना विराट था? उत्तर में न ही मिलेगा। आवश्यकता के अनुसार विकास होता है समय की मांग और उपयोगिता परिवर्तन को जन्म देती है यही परिवर्तन विकास की गाथा कहते हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज जिस पायदान पर है वह उसके विस्तार की कहानी स्वतः कह रही है।

जिन लोगों को मैटी के बारे में कोई सन्देह हो वह अपने स्तर से खुली दृष्टि से शोध करें निश्चित रूप से आप मैटी को जितना जानना चाहेंगे मैटी उससे कहीं आगे मिलेंगे।

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Certificate in Electro Homoeopathy	C.E.H.	10th. Standard or Equivalent	2 Years
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	Registered Practitioner in any Branch or Equivalent	1 Year
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years



बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ०प्र०

8-लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ-226001

प्रशा० कार्या० : 127/204 "एस" जूही, कानपुर-208014

website: www.behm.org.in

List of Medical Institutes/Institute

Sr.	Code	Name	District	Principle & Mob.No.
1	01	Ashish Electro Homoeopathic Medical Institute	RAIBARELY	EH Dr. P. N. Kushwaha 9415177119
2	03	Awadh Electro Homoeopathic Medical Institute	LUCKNOW	Dr. Ashutosh Kapoor 7007592773, 9125720111
3	05	Bhagwan Mahaveer Electro Homoeopathic Institute	JAUNPUR	EH Dr. P. K. Maurya 9451162709
4	06	Maa Sarju Devi Electro Homoeopathic Medical Institute	LAKHIMPUR	EH Dr. R.K. Sharma 9454236971
5	11	Chand Par Electro Homoeopathic Medical Institute	AZAMGARH	EH Dr. Mushtaq Ahmad 9415358163
6	12	Institute of Electro Homoeopathy	KANPUR	Contact No 9450153215, 9415074806
7	13	Azad Electro Homoeopathic Medical Institute, Kintoor	BARABANKI	EH Dr. Habib-ur-Rehman 8574239344
8	14	Dr. R. C. Upadhyay Institute of Electro Homoeopathic	SADABAD	Dr. Mamita 8193940245
9	15	Electro Homoeopathic Medical Institute	SHAHJAHANPUR	EH Dr. Ammar-Bin-Sabir 9336034277
10	16	Shahganj Electro Homoeopathic Medical Institute	Shahganj JAUNPUR	EH Dr. S. N. Rai 9450088327

List of Study Centres

Sr.	Code	Name	District	Principle/ Manager & Mob.No.
11	51	Fatehpur E.H. Study Centre	FATEHPUR	EH Dr. Vakeel Ahmad 8115210751
12	52	Deoria E.H. Study Centre	DEORIA	EH Dr. P. K. Srivastav 9415826491
13	53	Bahraich E.H. Study Centre	BAHRAICH	Dr. Bhoop Raj. Srivastav 9451786214
14	54	Unnao E.H. Study Centre	UNNAO	EH Dr. Gaurav Dwivedi 9935332052
15	55	Walidpur E.H. Study Centre	Walidpur MAU	EH Dr. Ayaz Ahmad 9305963908
16	56	Aarti E.H. Study Centre	JALAUN	EH Dr. Gaya Prasad 8874429538
17	57	B.K. E.H. Study Centre	HAMIRPUR (U.P.)	EH Dr. N.B.Nigam 7007352458
18	59	Sirsaganj E.H. Study Centre	Sirsaganj FIROZABAD	EH Dr. Mohd. Israr Khan 9634503421
19	60	Etawah E.H. Study Centre	ETAWAH	EH Dr. Mohd. Akhlak Khan 7417775346
20	61	Firozabad E.H. Study Centre	FIROZABAD	EH Dr. Shiv Kumar Pal 9027342885
21	62	D.L.M.M. Study Centre of E.H.	MAHARAJGANJ	EH Dr. Prince Srivasta 7398941680
22	63	Kushwaha E.H. Study Centre	KANPUR	EH Dr. Ram Autar Kushwaha 9793264649
23	65	P. R. D. Medical Centre of Electro Homoeopathy	LUCKNOW	EH Dr. Parikhan Ram Dhusia 9250959501
24	66	Electro Homoeopathic Study Centre	MAINPURI	EH Dr. Bahadur Ali 8273125464

AUTHORISED STUDY CENTRES OF OTHER STATES

Sr.	Code	Head of Centre	Address	District
25	82	The New Era of Electro Homoeopathy Study/Guidance Centre	12/1891 Ground Floor, Shop No: 3, Honey Park Apartment, Saiyed Wada, Shahpore, SURAT-395003	EH Dr. Abdul Rahman Khan Mobile No 8000241542

LIST OF AUTHRISED EXAMINATION CENTRES

Sr.	Code	Name of Examination Centre	Address	Name of Supdt. & Mobile No.
26	91	Khurja E.H. Examination Centre	Kurja, BULAND SHAHAR	EH Dr. P. K. Raghav 7505186156
27	92	E.H. Examination Centre, Moradabad	MORADABAD	EH Dr. S.K. Saxena 8171869605
28	94	E.H. Examination Centre	B.E.H.M.U.P. KANPUR	Registrar B.H.M.U.P 0512-2970704

Registrar
B.E.H.M.U.P.

बी० ई० एच० एम० के लिए डा० अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर-208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर-14 से प्रकाशित किया।